INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

औपनिवेशिक काल में झारखंड में महिला शिक्षा का विकास (1813-1947): ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

शोध निदेशक:

डॉ० संजीव कुमार

अध्यक्ष, इतिहास विभाग

एस० पी० कॉलेज, दुमका

शोध प्रज्ञा:

अंजेला मराण्डी

सिदो कान्हु मुर्मू वि० वि०, दुमका

सारांश (Abstract)

औपनिवेशिक काल में भारतीय समाज में शिक्षा के स्वरूप और उद्देश्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस परिवर्तन का प्रभाव महिलाओं की शिक्षा पर भी पड़ा, यद्यपि इसकी गति, क्षेत्र, जाति, वर्ग और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग रही। झारखंड के संदर्भ में महिला शिक्षा का इतिहास और अधिक विशिष्ट है, क्योंकि इस क्षेत्र में आदिवासी समाज की अपनी पारंपरिक ज्ञान एवं सामाजिक व्यवस्था विद्यमान थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से मिशनरियों तथा औपनिवेशिक प्रशासन की शैक्षिक गतिविधियों के विस्तार के साथ औपचारिक शिक्षा के नए अवसर विकसित हुए।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य औपनिवेशिक काल में झारखंड में महिला शिक्षा के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया का अध्ययन करना है। इसमें औपनिवेशिक शिक्षा नीति, मिशनरी संस्थाओं की भूमिका, बालिका विद्यालयों की स्थापना, महिला शिक्षकों की भूमिका तथा आदिवासी समाज में महिला शिक्षा के प्रति बदलती धारणा का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मिशनरी शिक्षा ने विशेष रूप से दूरस्थ एवं आदिवासी क्षेत्रों में औपचारिक शिक्षा के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसके साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और औपनिवेशिक उद्देश्यों का संबंध भी था।

इस प्रकार झारखंड में महिला शिक्षा का विकास केवल औपनिवेशिक प्रशासन की नीति का परिणाम नहीं था, बल्कि मिशनरी प्रयासों, स्थानीय समाज की प्रतिक्रियाओं तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन की संयुक्त प्रक्रिया थी।

मुख्य शब्द (Key Words): औपनिवेशिक काल, झारखंड, महिला शिक्षा, आदिवासी समाज, मिशनरी शिक्षा, बालिका शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम होता है। भारतीय इतिहास में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण औपनिवेशिक काल रहा। ब्रिटिश शासन के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में अनेक नीतिगत परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों का उद्देश्य केवल भारतीय समाज में आधुनिक ज्ञान का प्रसार करना नहीं था, बल्कि प्रशासन के लिए आवश्यक मानव संसाधन तैयार करना भी था।

महिला शिक्षा का प्रश्न औपनिवेशिक भारत में विशेष महत्व रखता था। उन्नीसवीं शताब्दी में महिला शिक्षा को लेकर सामाजिक सुधार आंदोलनों, मिशनरी संस्थाओं और औपनिवेशिक प्रशासन के बीच विभिन्न प्रकार की गतिविधियां दिखाई देती हैं। ऐतिहासिक स्रोतों में महिला शिक्षा के विकास, बालिका विद्यालयों और महिला शिक्षकों के प्रशिक्षण के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

झारखंड का सामाजिक संदर्भ इस सामान्य भारतीय स्थिति से कुछ अलग था। वर्तमान झारखंड का क्षेत्र मुख्यतः छोटानागपुर और संथाल परगना जैसे ऐतिहासिक क्षेत्रों से संबंधित रहा है, जहां विभिन्न आदिवासी समुदायों की अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराएं थीं। औपनिवेशिक शिक्षा विस्तार के साथ मिशनरियों, सामाजिक सुधारकों और कुछ अन्य स्थानीय शिक्षित समुदायों ने महिला शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित किए। लेकिन इसका विकास धीमा, असमान और मुख्यतः नगरीय तथा मिशन केंद्रों तक सीमित रहा।

'छोटानागपुर में औपनिवेशिक शिक्षा का प्रसार अन्य विकसित क्षेत्रों की तुलना में काफी धीमा था और उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मिशनरियों को शिक्षा के प्रसार का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया गया।' औपनिवेशिक काल में मिशनरी संस्थाओं के आगमन के साथ औपचारिक विद्यालयी शिक्षा का विस्तार हुआ। झारखंड में शिक्षा के इतिहास पर उपलब्ध साहित्य में 1813 से 1947 के बीच महिला शिक्षा के विकास को विशेष अध्ययन का विषय बनाया गया है, तथा औपनिवेशिक काल में झारखंड के महिला शिक्षा के विकास में औपनिवेशिक सरकार, मिशनरी संस्थानों तथा अन्य समाज सुधारकों के द्वारा किये गए कार्यों के बारे में अध्ययन करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

पृष्ठभूमि

औपनिवेशिक काल में झारखंड में महिला शिक्षा का विकास भारतीय शिक्षा के व्यापक औपनिवेशिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय पक्ष था। 1813 के चार्टर एक्ट के पश्चात् भारत में शिक्षा के प्रति औपनिवेशिक राज्य की भूमिका में धीरे-धीरे वृद्धि हुई। यद्यपि प्रारंभिक औपनिवेशिक शिक्षा नीति का मुख्य केंद्र व्यापक रूप से प्रशासनिक आवश्यकताओं और आधुनिक शिक्षा के प्रसार से जुड़ा था, किंतु मिशनरी संस्थाओं तथा भारतीय समाज-सुधार आंदोलनों के प्रयासों से महिला शिक्षा के प्रश्न को धीरे-धीरे महत्व प्राप्त हुआ। झारखंड क्षेत्र में यह प्रक्रिया अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और जनजातीय परिस्थितियों के बीच विकसित हुई।

झारखंड के जनजातीय समाज में शिक्षा की अपनी पारंपरिक एवं सामुदायिक प्रणालियां विद्यमान थीं। ज्ञान का हस्तांतरण मुख्यतः मौखिक परंपरा, परिवार, समुदाय, लोकगीत, नृत्य, कृषि अनुभव, वन एवं प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अनुष्ठानों के माध्यम से होता था। महिलाओं की इस ज्ञान परंपरा को सुरक्षित

रखने में महत्वपूर्ण भूमिका थी। P. O. Bodding ने अपनी कृति 'Santal Folk Tales' में लिखा है कि औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के व्यापक प्रसार से पहले संथाल समाज में महिलाओं का ज्ञान मुख्यतः मौखिक परंपरा, पारिवारिक अनुभव, सामाजिक व्यवहार और सामुदायिक संस्कृति के माध्यम से विकसित होता था। अतः औपनिवेशिक काल में आधुनिक विद्यालयी शिक्षा के आगमन को केवल शिक्षा संस्थाओं की स्थापना के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है, इसे पारंपरिक ज्ञान व्यवस्था और नई औपचारिक शिक्षा के बीच विकसित हुए संबंधों के संदर्भ में भी समझना आवश्यक है।

1813 से 1854 के बीच महिला शिक्षा के प्रारंभिक प्रयासों से लेकर 1854 के बाद शिक्षा नीति के संस्थागत विकास तथा 1904 से 1947 के बीच महिला शिक्षा के क्रमिक विस्तार तक झारखंड में बालिका एवं महिला शिक्षा ने विभिन्न चरणों में विकास किया। इस प्रक्रिया में ईसाई मिशनरियों, औपनिवेशिक प्रशासन, सामाजिक-सुधार प्रयासों तथा बाद के राष्ट्रीय आंदोलन की अलग-अलग भूमिकाएं रही हैं। छोटानागपुर और संथाल परगना इस विकास के दो महत्वपूर्ण क्षेत्र रहे, जहां महिला शिक्षा का स्वरूप स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्रभावित हुआ।

प्रथम चरण : 1813-1854 (झारखंड में महिला शिक्षा के प्रारंभिक प्रयास)

प्रारंभ में औपनिवेशिक सरकार ने शिक्षा के प्रसार में कोई विशेष रूचि नहीं ली। परंतु 1813 के चार्टर एक्ट के माध्यम से शिक्षा के विकास में एक नई शुरूआत की गई। इस चार्टर एक्ट में विज्ञान के ज्ञान को बढ़ावा देने तथा शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखने के लिए सालाना 1 लाख रूपया खर्च करने का निर्देश था। लेकिन 1823 तक कंपनी के अधिकारियों ने इस काम के लिए थोड़ा सा रकम भी खर्च नहीं किया। इसके साथ ही मिशनरी संस्थाओं को धर्म प्रचार करने की छूट दी गई। छोटानागपुर में 1830 के दशक में औपचारिक विद्यालयी शिक्षा के प्रयास दिखाई देने लगे। झारखंड में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार 1835 के 'मैकाले प्रपोजल' के परिणामस्वरूप देवघर तथा राँची जिला स्कूल की स्थापना के साथ देखा जा सकता है। इस प्रारंभिक शिक्षा का मुख्य लाभ पुरूष विद्यार्थियों को मिला, लड़कियों की शिक्षा अभी बहुत सीमित थी। अतः 1813-1830 के दशक को झारखंड में महिला शिक्षा के प्रत्यक्ष विकास से अधिक उसकी नीतिगत पृष्ठभूमि का काल कहा जा सकता है।

भारत में मिशनरियों का आगमन पुर्तगाली कंपनी के आगमन के साथ ही वर्तमान गोवा क्षेत्र में हुआ। सैण्ट फ्रांसिस जेवियर (1542) और राबर्ट डी नोबिली भारत आने वाले प्रथम मिशनरी थे। कंपनी से प्रोत्साहन पाकर अंग्रेजी मिशनरियों ने मद्रास, बम्बई एवं बंगाल में अनेक 'दान आश्रित विद्यालय' स्थापित करना आरंभ कर दिये। 1845 ई० में छोटानागपुर में गोस्नर मिशन (जर्मन मिशन) का आगमन हो चुका था तथा झारखंड में पाश्चात्य शिक्षा की नींव विधिवत जर्मन मिशन ने डाली। प्रारंभिक वर्षों में मिशनरियों को स्थानीय जनजातीय समाज से अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिली। मिशनरियों ने धार्मिक गतिविधियों के साथ शिक्षा और सामाजिक सेवा को भी अपने कार्य का हिस्सा बनाया। मिशनरियों के झारखंड पहुंचने से जहां एक ओर विद्यालयी शिक्षा के विकास का अवसर मिला, जनजातीय समाज में पढ़ने-लिखने की संभावना बढ़ी तथा छोटानागपुर क्षेत्र में मिशनरी संस्थाओं ने लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा देने के प्रयास किए। वहीं दूसरी ओर ईसाई मिशनरियों के शिक्षा प्रसार के पीछे का उद्देश्य ईसाई

धर्म का प्रचार करना था। स्थानीय समाज में मिशनरियों के प्रति अविश्वास था; गैर-ईसाई आदिवासी शिक्षा को समय की बर्बादी समझते थे तथा औपनिवेशिक शिक्षा स्थानीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से पूरी तरह अनुकूलित नहीं थी।

महिला शिक्षा के विकास में सबसे बड़ी चुनौती केवल विद्यालयों की कमी नहीं थी। स्थानीय समाज और औपनिवेशिक संस्थाओं के बीच विश्वास का अभाव भी महत्वपूर्ण था। औपनिवेशिक शिक्षा को जनजातीय समाज ने पूरी तरह स्वीकार नहीं किया। जनजातीय समाज में शिक्षा की परंपरा मुख्यतः मौखिक और सामुदायिक थी। लड़कियों को विद्यालय भेजना स्वयं एक नई सामाजिक प्रक्रिया थी।

1813-1854 के दौरान संथाल समाज में आधुनिक औपचारिक महिला शिक्षा का विकास अत्यंत प्रारंभिक अवस्था में था, जबकि महिलाओं की पारंपरिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिका मजबूत थी। इस चरण में झारखंड में आधुनिक महिला शिक्षा अभी प्रारंभिक अवस्था में थी।

द्वितीय चरण : 1854-1904 (झारखंड में महिला शिक्षा का संस्थागत विकास)

1854 से 1904 का काल झारखंड मे महिला शिक्षा के प्रारंभिक संस्थागत विकास का महत्वपूर्ण चरण था। 1854 के वुड्स डिस्पैच के बाद ब्रिटिश भारतीय सरकार ने शिक्षा के विस्तार, अनुदान प्रणाली और महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने की नीति अपनाई। इसका प्रभाव छोटानागपुर और संथाल परगना में भी पड़ा। हालांकि इस क्षेत्र में शिक्षा का विकास बंगाल की तुलना में धीमा रहा, क्योंकि यहां जनजातीय बहुल ग्रामीण समाज, दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियां और सीमित प्रशासनिक ढांचा मौजूद था।

1854 का वुड्स डिस्पैच भारतीय शिक्षा के इतिहास में महत्वपूर्ण मोड़ था। इसमें प्राथमिक शिक्षा के विस्तार, शिक्षा विभाग की स्थापना, अनुदान प्रणाली तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहन देने पर जोर दिया गया। शिक्षा अब केवल मिशनरियों की गतिविधि नहीं रही, बल्कि औपनिवेशिक प्रशासन के व्यापक शिक्षा-तंत्र का हिस्सा बनने लगी। इससे छोटानागपुर और संथाल परगना में विद्यालयों के विकास के लिए अनुकूल प्रशासनिक वातावरण बना।

1854-1904 के बीच झारखंड में महिला शिक्षा के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। गोस्नर मिशन, रोमन कैथोलिक मिशन, एस० पी० जी० मिशन तथा अन्य मिशनरी संस्थाओं ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया। मिशनरियों ने विशेष रूप से जनजातीय बालिकाओं के लिए विद्यालय, छात्रावास और प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए। इन विद्यालयों में केवल पढ़ना-लिखना ही नहीं, बल्कि गणित की प्रारंभिक शिक्षा, धार्मिक शिक्षा, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, गृह प्रबंधन, स्वच्छता तथा प्राथमिक चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

विशेष रूप से रांची, गुमला, लोहरदगा, चाईबासा, दुमका तथा हजारीबाग जैसे क्षेत्रों में मिशनरी विद्यालयों ने महिला शिक्षा को नई दिशा प्रदान की। गरीब छात्राओं को निशुल्क शिक्षा, पुस्तकें, भोजन और आवास जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गईं। हालांकि मिशनरियों का प्रमुख उद्देश्य धार्मिक प्रचार भी था, लेकिन उनके प्रयासों से झारखंड

में महिला साक्षरता का प्रारंभिक आधार तैयार हुआ और अनेक जनजातीय परिवार पहली बार औपचारिक शिक्षा से जुड़े।

1854 के बाद संथाल परगना में शिक्षा के विकास को औपनिवेशिक प्रशासन, ईसाई मिशनरियों और संथाल समाज की बदलती शैक्षिक आकांक्षाओं के संयुक्त परिणाम के रूप में देखा जा सकता है। 1855 के संथाल विद्रोह के बाद संथाल बहुल क्षेत्र को अलग प्रशासनिक व्यवस्था देने की प्रक्रिया हुई और 1856 में संथाल परगना एक पृथक जिला बना। इसके बाद सरकार तथा मिशनरी संस्थाओं ने संथालों के बीच प्राथमिक शिक्षा के विस्तार पर विशेष ध्यान दिया। 1862 में जहां मिशन के अधीन विद्यालयों की संख्या बहुत कम थी, वहीं 1868 तक विद्यालयों की संख्या बढ़कर 36 हो गई। इस प्रकार मिशनरी शिक्षा केवल धर्म-प्रचार तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने पढ़ने-लिखने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की आधारभूमि भी तैयार की। 1890 के दशक में संथाल परगना में विद्यालयों की तुलना में मिशन केन्द्रों, धार्मिक संस्थाओं और आवासीय विद्यालयों के माध्यम से शिक्षा पहुंचाने का प्रयास अधिक सफल रहा।

1854 के बाद सरकार ने शिक्षा में प्रत्यक्ष विद्यालय स्थापना के साथ-साथ अनुदान (Grant-in-Aid) जैसी व्यवस्था के माध्यम से निजी और मिशनरी विद्यालयों को सहायता देना शुरू किया। 1882 के भारतीय शिक्षा आयोग (Hunter Commission) ने प्राथमिक शिक्षा और महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने तथा स्थानीय संस्थाओं और निजी संगठनों की भूमिका बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। 1902 में Indian University Commission की नियुक्ति हुई और 1904 में भारतीय शिक्षा व्यवस्था के प्रशासन से संबंधित महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। इस समय तक झारखंड में महिला शिक्षा का आधार तैयार हो चुका था। हालांकि 1904 तक बालिका शिक्षा अभी सीमित थी, लेकिन मिशनरी विद्यालय, बालिका शिक्षा, महिला शिक्षिका, छात्रावास या आवासीय शिक्षा तथा सामाजिक जागरूकता का एक प्रारंभिक ढांचा विकसित हो चुका था।

तृतीय चरण : 1904-1947 (महिला शिक्षा का विस्तार और सामाजिक जागरण)

1904 के बाद छोटानागपुर और संथाल परगना में शिक्षा का विस्तार पहले की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित रूप में दिखाई देता है। मिशनरी संस्थाओं ने विशेष रूप से लड़कियों के लिए प्राथमिक विद्यालय, बालिका विद्यालय, छात्रावास तथा आवासीय शिक्षा केंद्र स्थापित किए। रांची, लोहरदगा, गुमला, खूंटी, सिंहभूम, दुमका और आसपास के क्षेत्रों में मिशनरी शिक्षा का प्रभाव बढ़ा। इस समय महिला शिक्षा केवल पढ़ना-लिखना सिखाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि सिलाई, कढ़ाई, स्वास्थ्य, स्वच्छता, घरेलू कार्य और धार्मिक शिक्षा को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया था।

इस काल में मिशनरियों ने विशेषकर रोमन कैथोलिक, लूथरन तथा अन्य प्रोटेस्टेंट मिशनरियों ने झारखंड में बालिकाओं के लिए अलग विद्यालय खोले, तथा दूर-दराज क्षेत्रों के छात्राओं के लिए छात्रावास खोले। इन्होंने जनजातीय बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया, महिला शिक्षिका प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की तथा प्राथमिक शिक्षा के साथ व्यावसायिक एवं घरेलू प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई।

संथाल परगना में महिला शिक्षा का विकास छोटानागपुर की तुलना में और अधिक चुनौतीपूर्ण था। इस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, आर्थिक पिछड़ापन, ग्रामीण आबादी की अधिकता तथा विद्यालयों की सीमित संख्या के कारण बालिकाओं की शिक्षा का स्तर धीमा था। एल० एस० एस० ओ'मैली (L.S.S. O'Malley) के अनुसार संथाल परगना के विभिन्न विद्यालयों की निगरानी के लिए उप-निरीक्षक और निरीक्षक पंडित नियुक्त किए गए थे। दुमका, देवघर, गोड्डा, जामताड़ा और पाकुड़ जैसे स्थान शिक्षा के प्रमुख केंद्र बनने लगे।

1904 का शिक्षा संबंधी सरकारी प्रस्ताव और बाद की नीतियों ने प्राथमिक शिक्षा तथा महिला शिक्षा के विस्तार पर बल दिया। 1910 के दशक के बाद शिक्षा का प्रशासन द्वारा प्रांतीय स्तर पर परिवर्तन हुए और महिला शिक्षा के लिए सरकारी सहायता तथा अनुदान की व्यवस्था विकसित हुई।

1937 के बाद प्रांतीय स्वशासन और शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय नेतृत्व की भूमिका बढ़ी। इस समय प्राथमिक शिक्षा, महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार पर अधिक ध्यान दिया गया। 1940 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध और आर्थिक समस्याओं के बावजूद महिला शिक्षा का विस्तार जारी रहा। 1944 की सार्जेंट योजना ने भारत में शिक्षा के व्यापक विस्तार और महिला शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार किया। हालांकि इसकी पूर्ण योजना स्वतंत्रता से पहले लागू नहीं हो सकी।

भारतीय समाज सुधारकों द्वारा झारखंड में महिला शिक्षा के विकास में योगदान

झारखंड में महिला शिक्षा का विकास केवल औपनिवेशिक सरकार और ईसाई मिशनरियों के प्रयास का परिणाम नहीं था। भारतीय समाज-सुधार आंदोलनों, स्थानीय शिक्षित वर्ग, आदिवासी नेतृत्व तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी महिलाओं को शिक्षा से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सामाजिक सुधारकों में ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी तथा स्थानीय शिक्षित लोगों के योगदान विशेष उल्लेखनीय हैं।

(क) ईश्वरचंद्र विद्यासागर

इनका मुख्य कार्यक्षेत्र बंगाल था, परंतु उनके स्त्री-शिक्षा, विधवा-विवाह और सामाजिक सुधार के विचारों का प्रभाव बंगाल से सटे संथाल परगना और छोटानागपुर के शिक्षित समाज पर पड़ा। उन्होंने यह विचार स्थापित किया कि महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए शिक्षा आवश्यक है। उनके विचारों के व्यापक प्रभाव से पूर्वी भारत में बालिका विद्यालयों तथा महिला शिक्षा के प्रति सामाजिक समर्थन बढ़ा।

(ख) केशवचंद्र सेन और ब्रहम समाज

ब्रहम समाज ने स्त्री शिक्षा को सामाजिक सुधार का महत्वपूर्ण साधन माना। ब्रहम समाज ने बालिका शिक्षा, महिला साक्षरता, बाल विवाह का विरोध तथा स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में सुधार जैसे विषयों को सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बनाया। बंगाल और बिहार के माध्यम से इसके सुधारवादी विचारों का प्रभाव झारखंड के शिक्षित शहरी वर्ग तक पहुंचा।

(ग) दयानंद सरस्वती और आर्य समाज

आर्य समाज ने महिलाओं की शिक्षा को सामाजिक पुनर्निर्माण का आवश्यक अंग माना। झारखंड में आर्य समाज का प्रभाव विशेष रूप से शहरी और शिक्षित वर्ग में दिखाई दिया। आर्य समाज के द्वारा रांची में 1900 ई० में वेद विद्यालय की स्थापना इसी दिशा में किए गए प्रयास थे।

(घ) महात्मा गांधी और महिला शिक्षा

बीसवीं शताब्दी में महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव झारखंड में महिला शिक्षा पर भी पड़ा। गांधीजी शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के पक्षधर थे। उनकी बुनियादी शिक्षा की अवधारणा में मातृभाषा, श्रम, स्वावलंबन, नैतिक शिक्षा और सामाजिक सेवा को महत्व दिया गया। झारखंड में राष्ट्रीय आंदोलन के प्रसार के साथ महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी बढ़ी। इससे महिला शिक्षा को सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण से जोड़ने में सहायता मिली।

आदिवासी समाज और महिला शिक्षा

झारखंड के महिला समाज में महिला शिक्षा के प्रति प्रतिक्रिया एक समान नहीं थी। विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों में शिक्षा को स्वीकार करने की गति अलग-अलग रही। प्रारंभिक अवस्था में विद्यालयी शिक्षा को लेकर संकोच और दूरी दिखाई दे सकती थी, क्योंकि औपचारिक विद्यालयी व्यवस्था स्थानीय जीवन-पद्धति से भिन्न थी।

फिर भी समय के साथ शिक्षा के सामाजिक लाभ दिखाई देने लगे। पढ़ी-लिखी महिलाएं परिवार और समुदाय में पत्र-व्यवहार, प्राथमिक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, प्रशासनिक प्रक्रियाओं तथा बच्चों की शिक्षा में सहायता करने लगीं। महिला शिक्षा ने धीरे-धीरे महिलाओं के सामाजिक आत्मविश्वास और सार्वजनिक भागीदारी के लिए भी नए अवसर पैदा किए। इस परिवर्तन को तत्काल और पूर्ण सामाजिक मुक्ति के रूप में देखना उचित नहीं होगा, बल्कि यह एक क्रमिक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी।

महिला विद्यालय और शिक्षक प्रशिक्षण

महिला शिक्षा के विकास में केवल विद्यालयों की स्थापना ही पर्याप्त नहीं थी। महिला शिक्षकों की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण थी। औपनिवेशिक बंगाल के अध्ययन से पता चलता है कि महिला शिक्षकों का प्रशिक्षण मिशनरी शैक्षिक गतिविधियों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से था। झारखंड जैसे सामाजिक और भौगोलिक रूप से विशिष्ट क्षेत्र में महिला शिक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण रही होगी, क्योंकि परिवारों की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने में महिला शिक्षिकाएं अपेक्षाकृत उपयोगी माध्यम बन सकती थीं। महिला शिक्षकों की संख्या में वृद्धि से बालिकाओं के लिए विद्यालयी वातावरण अधिक अनुकूल बना और महिला शिक्षा को सामाजिक रूप से स्वीकार किए जाने की प्रक्रिया को बल मिला।

महिला शिक्षा के मार्ग में प्रमुख बाधाएं

औपनिवेशिक झारखंड में महिला शिक्षा के विकास के सामने अनेक बाधाएं थीं-

1. सामाजिक रूढ़ियां : महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं को लेकर बनी धारणाएं विद्यालयी शिक्षा के विस्तार में बाधक थीं। समाज में ऐसी धारणाएं बनी हुई थीं कि लड़कियों को पढ़ाना-लिखाना अशुभ माना जाता था तथा लड़कियां ब्याह के बाद दूसरे घर चली जाएंगी, इसीलिए भी महिला शिक्षा के प्रति लोग उदासीन थे।

2. आर्थिक कठिनाईयां : गरीब परिवारों में बालिकाओं से घरेलू और आर्थिक कार्यों में सहयोग की अपेक्षा की जाती थी, जिससे विद्यालय भेजना कठिन होता था तथा लोगों को विद्यालयी शिक्षा समय की बर्बादी लगती थी।

3. विद्यालयों की कमी : ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में विद्यालयों की सीमित उपलब्धता एक महत्वपूर्ण समस्या थी। लोग लड़कियों को दूर स्थित विद्यालयों में भेजना नहीं चाहते थे।

4. भौगोलिक परिस्थितियां : झारखंड का पहाड़ी, वनाच्छादित और अपेक्षाकृत दुर्गम भौगोलिक स्थिति होने के कारण ऐसे दूरस्थ जगहों पर विद्यालय चलाना असंभव प्रतीत होता था, जिससे बालिकाएं विद्यालयों तक नहीं पहुंच पाती थीं।

5. सांस्कृतिक दूरी : औपनिवेशिक विद्यालयी पाठ्यक्रम और स्थानीय आदिवासी जीवन पद्धति के बीच अंतर भी शिक्षा के प्रति दूरी का कारण बन सकता था। झारखंड के जनजातीय लोग स्वतंत्र जीवन जीना पसंद करते हैं, इन कारणों से भी उनके लिए औपचारिक शिक्षा ग्रहण करना कठिन कार्य था।

महिला शिक्षा का सामाजिक प्रभाव

महिला शिक्षा ने झारखंड के सामाजिक जीवन में धीरे-धीरे परिवर्तन उत्पन्न किया। शिक्षित महिलाओं की भूमिका परिवार के भीतर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में बढ़ने लगी। शिक्षा ने महिलाओं को लिखित भाषा और औपचारिक संस्थाओं से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आगे चलकर यही प्रक्रिया महिलाओं की सामाजिक भागीदारी के विस्तार का आधार बनी।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

औपनिवेशिक काल में झारखंड में महिला शिक्षा का विकास अनेक विरोधाभासों से युक्त था। एक ओर ब्रिटिश शासन ने आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का विस्तार किया तथा मिशनरी संस्थाओं को विद्यालय स्थापित करने का अवसर दिया, वहीं दूसरी ओर सरकार ने जनजातीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों में महिला शिक्षा के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं कराए। परिणामस्वरूप महिला शिक्षा का विकास मुख्यतः मिशनरी संस्थाओं पर निर्भर रहा।

झारखंड के जनजातीय समाज में महिलाओं की सामाजिक भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक थी, किंतु औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था सीमित थी। मिशनरियों ने इस स्थिति को बदलने का प्रयास किया। उन्होंने बालिकाओं के लिए विद्यालय, छात्रावास तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इससे महिला साक्षरता में वृद्धि हुई तथा सामाजिक जागरूकता का विकास हुआ।

वुड्स डिस्पैच (1854), हंटर आयोग (1882), सैडलर आयोग (1917-19), तथा सार्जेंट योजना (1944) जैसी नीतियों ने महिला शिक्षा को वैचारिक समर्थन तो दिया, लेकिन झारखंड के दुर्गम क्षेत्रों में इनका प्रभाव सीमित रहा। सरकारी व्यय कम था, विद्यालयों की संख्या अपर्याप्त थी तथा प्रशिक्षित महिला शिक्षकों का अभाव बना रहा। इसलिए महिला शिक्षा का विस्तार अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच सका।

इतिहासकारों का मत है कि औपनिवेशिक शिक्षा ने भारतीय समाज में आधुनिक चेतना, महिला शिक्षा तथा सामाजिक सुधार आंदोलनों को गति दी, परन्तु इसका लाभ सभी क्षेत्रों और समुदायों तक समान रूप से नहीं पहुंचा। झारखंड इसका स्पष्ट उदाहरण है, जहां जनजातीय महिलाओं की शिक्षा में प्रगति हुई, किंतु वह क्षेत्रीय असमानताओं से प्रभावित रही।

निष्कर्ष

औपनिवेशिक काल में झारखंड में महिला शिक्षा का विकास एक क्रमिक एवं बहुआयामी ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से औपचारिक शिक्षा के विस्तार के साथ बालिकाओं के लिए शिक्षा के अवसर धीरे-धीरे विकसित हुए। मिशनरी संस्थाओं ने विद्यालयों की स्थापना, महिला शिक्षा तथा महिला शिक्षकों के प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झारखंड के आदिवासी समाज में महिला शिक्षा का विकास केवल बाहरी प्रभाव का परिणाम नहीं था; स्थानीय समाज की प्रतिक्रिया, महिलाओं की भागीदारी, सामाजिक आवश्यकताओं और बदलती आर्थिक परिस्थितियों ने भी इस प्रक्रिया को प्रभावित किया।

1813-1854 का काल झारखंड में महिला शिक्षा के इतिहास में व्यापक विस्तार की अपेक्षा आधार निर्माण का काल था। इस अवधि में पारंपरिक जनजातीय ज्ञान-व्यवस्था और औपनिवेशिक विद्यालयी शिक्षा के बीच संपर्क स्थापित हुआ। 1830 के दशक में छोटानागपुर में औपचारिक शिक्षा के प्रारंभिक प्रयास तथा 1845 में गोस्नर मिशन का आगमन इस परिवर्तन के महत्वपूर्ण पड़ाव रहे। हालांकि इस समय बालिका शिक्षा के संस्थागत विकास की आधारभूमि तैयार की गई, अतः 1813-1854 को झारखंड में आधुनिक महिला शिक्षा के 'प्रारंभिक संक्रमण काल' के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

1854-1904 का काल झारखंड में महिला शिक्षा के इतिहास में संस्थागत विकास और क्रमिक विस्तार का महत्वपूर्ण चरण था। 1854 के वुड्स डिस्पैच ने औपनिवेशिक शिक्षा व्यवस्था को अधिक संगठित आधार प्रदान किया, जबकि मिशनरी संस्थाओं ने छोटानागपुर और संथाल परगना जैसे क्षेत्रों में विद्यालयी शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महिला शिक्षा के माध्यम से बालिकाओं को पढ़ना-लिखना, व्यावहारिक कौशल तथा स्वास्थ्य एवं घरेलू जीवन से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। तथापि, सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक कठिनाईयों, महिला शिक्षिकाओं की कमी, भौगोलिक दुर्गमता तथा औपनिवेशिक शिक्षा के प्रति जनजातीय समाज के सीमित विश्वास के कारण महिला शिक्षा का विस्तार धीमा रहा।

1904-1947 के बीच झारखंड में महिला शिक्षा ने औपनिवेशिक शैक्षणिक व्यवस्था, मिशनरी प्रयासों और भारतीय सामाजिक जागरण के संयुक्त प्रभाव से एक नए चरण में प्रवेश किया। इस अवधि में बालिका विद्यालयों, छात्रावासों और महिला शिक्षिकाओं की संख्या में वृद्धि हुई तथा जनजातीय महिलाओं को औपचारिक शिक्षा से जोड़ने के प्रयास किए गए। यद्यपि गरीबी, सामाजिक रूढ़ियां, बाल विवाह, भौगोलिक कठिनाइयां और भाषा संबंधी समस्याएं इसकी व्यापकता में बाधक रहीं, फिर भी इस काल ने स्वतंत्रता के बाद झारखंड में महिला शिक्षा के विस्तार के लिए आधारभूमि तैयार की।

अंततः कहा जा सकता है कि झारखंड में महिला शिक्षा का विकास औपनिवेशिक सरकार, मिशनरियों और भारतीय समाज-सुधार आंदोलनों की परस्पर क्रिया का परिणाम था। विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी जैसे सुधारकों के विचारों ने महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन से जोड़ा, वहीं स्थानीय शिक्षित वर्ग और आदिवासी नेतृत्व ने इन विचारों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप आगे बढ़ाया। 1854-1904 में मिशनरी प्रयासों ने जहां महिला शिक्षा का प्रारंभिक संस्थागत आधार बनाया, वहीं 1904-1947 में भारतीय समाज-सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन ने इसे सामाजिक जागरण, स्वावलंबन और महिला सशक्तिकरण से जोड़ने का कार्य किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. Joseph Bara, Schooling Truant Tribes: British Colonial Compulsions and Education Evolution in Chotanagpur, 1870-1930, Studies in History, Vol-26, no.2, 2010, page-143-173
2. P. O. Bodding, Santal Folk Tales, vol. I-III, Oslo: H. Aschehoug, 1925, page-219-221
3. विपिन चंद्र, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद, 2022, पृ०-109
4. किरण कुमारी पासी, निदेशक, आधुनिक भारत, झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रांची, 2023, पृ०-92
5. शालिग्राम त्रिपाठी, भारतीय शिक्षा का इतिहास, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009, पृ०-76, 78
6. डॉ० बी० वीरोत्तम, झारखंड इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ०-564
7. डॉ० बी० वीरोत्तम, वही
8. प्रो० पी० एन० चतुर्वेदी, भारतीय शिक्षा व्यवस्था का विकास, प्रेमनाथ एण्ड संस, दिल्ली, 2018, पृ०-42
9. The Imperial Gazetteer of India, vol. XXII, Oxford: Clarendon Press, 1908, page-78
10. प्रो० पी० एन० चतुर्वेदी, वही, पृ०-48, 54
11. Abha Xalxo, History of Education in Jharkhand (1845 to 1947), S.K. Publishing Company, Ranchi, 2010, page-44-82
12. L.S.S. O'Malley, Bengal District Gazetteers Santhal Parganas, Gyan Publishing House, New Delhi, 2017, page-240
13. Subal Chandra Mitra, Isvar Chandra Vidyasagar: A Story of His Life and Work, New Bengal Press, Calcutta, 1902, Page-221-241
14. L.N. Rana, Political Consciousness in Jharkhand, 1900-1947, vol-57, 1996, page-467-481
15. L. N. Rana, Political Consciousness in Jharkhand, वही

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

RESEARCH GATEWAY

AROGYAM ONLINE

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM